ग़ज़ल संग्रह

फ़ज़ा -ए- हस्ती

दाहिर आज़मगढ़ी

फ़ज़ा-ए-हस्ती

(ग़ज़ल-संग्रह)

जो हादिसे हैं गुज़रे मेरी जीस्त में याँ तक
यह उनकी ही तफ़सील बयाँ कर रहा हूँ मैं

फ़ज़ा-ए-हस्ती

(ग़ज़ल-संग्रह)

दाहिर आज़मगढ़ी

संकल्प प्रकाशन
दिल्ली

प्रकाशक
संकल्प प्रकाशन
ए-201, गली नं. 4बी, पार्ट-2
पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090
मो. 9868425378
Email : ssankalpprakashan@gmail.com

मुद्रक : पूजा ऑफसेट

प्रथम संस्करण : 2026

मूल्य : 250 रुपए (सजिल्द)

ISBN : 978-93-91040-69-7

© : दाहिर आज़मगढ़ी

कंप्यूटर अक्षर संरचना
आशीष प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110093

Faza-E-Hasti

By *Dahir Azamgarchi*

तक़रीज़

आज़मगढ़ को इल्मो अदब के लिहाज़ से एक आलातरीन सर ज़मीं माना जाता है। ज़िले की नामवर शख़्सियात ने अपनी तख़लीक़ी सलाहियतों से इस सर ज़मीं की आबयारी की है। आज भी बहुत से अदीब इल्मो अदब के मुताले में मसरूफ़ हैं। ऐसा ही एक नाम दाहिर आज़मगढ़ी का है। इनकी शायरी में पुख़्तगी और ज़िंदगी के तजुर्बात नज़र आते हैं मैंने उनकी पहली किताब 'हद-ए-अमल से आगे लिखूँगा' पर भी अपने ख़यालात का इज़हार किया है।

अँग्रेज़ी में ता'लीमयाफ़्ता होने और उर्दू की कॉलेज की तरबियत न होने के बावजूद उर्दू में कहना बड़ी शुजाअत का करनामा है। दाहिर हिंदी में भी शायरी लिखते हैं, जिसमें हिंदी की हर सिन्फ़ का इस्तेमाल किया है, चाहे गीत, मुक्तक, हास्य व्यंग्य या छंद। इसमें इनकी हिंदी की रवायती तज़मीम शामिल है। ताहम इन्हें उर्दू से ख़ास लगाव है। इनकी ग़ज़लें मश्क़ की 'अकासी करती हैं, जो ग़ज़ल कहने में इनकी महारत की निशानदेही करती हैं। इनकी ग़ज़लें पुख़्ता बुनियाद पर हैं। बहर की बात करें तो इसके बारे में काफ़ी उलझनें पेश आती हैं। हिंदी तलफ़्फ़ुज़ और उर्दू अल्फ़ाज़ में काफ़ी तनाज़े हैं। बहुत से अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जो मुबहम हैं जैसे शुरू' (शुरू) मुतवातिर वग़ैरह। हिंदी रस्मुलख़त में इनका वज़्न दूसरा है और उर्दू में दूसरा। मैंने देखा है कि दाहिर ऐसे तनाज़े वाले अल्फ़ाज़ से गुरेज़ करते हैं। इंसान का फ़न, ख़यालात और ज़िंदगी के तजुर्बात उसके ज़ेह्न में तहलील हो जाते हैं और आहिस्ता-आहिस्ता शक्ल

इख़्तियार कर लेते हैं। शायरी के पास इज़हार का जज़्बा और हदों को आगे बढ़ाने की आमादगी है–

बादशाही की तो जो लत लगी है मुझको उस
रख़्त हर तरह सियासत का साथ रखता हूँ

और–

बारे ग़म जीस्त मेरी बन गयी है
शायरी बज़्म से अब हट गयी है

उनकी शायरी में बेतक़ल्लुफ़ी नुमायाँ होती है और साफ़गोई पूरी तरह अयाँ होती है–

नसब अपने को वो तो दूर से पहचान लेते हैं
सलासिल तोड़कर अख़लाक़ की झट थाम लेते हैं

और–

दहाई सालों से लटके मुकदमे अब भी ज़िंदा हैं
मगर है ख़ौफ़ इतना कि कहा काहिल नहीं जाता

इन्होंने ज़िंदगी की मसरूफ़ियात और बदलते हुए समाजी माहौल को ख़ूबसूरती से कहा है–

डूबती साँसों के पन में एक मसला बन गया
था नसब में अपने ही मैं फिर भी तन्हा बन गया

और–

पैर खींचा तिफ़्ल ने जिसको सिखाया चलना था
मुख़्तसर दी थी जिसे मालिक जगह का बन गया

इनकी शायरी फ़लसफ़े से भरपूर है, चाहे वह आम आदमी की ज़िंदगी का मा’मला हो या दुनियावी मसाइल–

ले चलो उस ओर जिस जानिब है सूखी इक नदी
उस नदी की रेत से दीवार बननी चाहिए

और–

मुझे तो अब भी नामालूम क़िस्स-ए-अस्ल जन्नत का
उसी की ताब कठपुतली बनाता है मुझे अपना

मुहब्बत, वफ़ा, ईसार, तंज़, शिकायतें इख़्लाक़ियात, मुआशरक़ी और बेहिसी इनकी शायरी में आम देखने को मिलती है। इन्होंने मुहब्बत के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा है लेकिन जो कुछ भी कहा है वह मुहब्बत के ग़मों से लबरेज़ है–

मिरी नज़रों की बेनूरी से अब लेगा तो क्या लेगा
बहुत बदनाम कर सद हैफ़ जब देगा तो क्या देगा

और–

जो कभी थकते नहीं थे वफ़ा की कसमों से
उनके कूचे में रक़ीबों के जश्न होते हैं

इनके लिये मुल्क सबसे अहम है और अमन इनका मरकज़ है। जब मुल्क की बात आती है तो इन्होंने सियासतदानों को भी नहीं बख़्शा है और पैग़ाम दिया है–

रहमतें मत कर तू मुझको डर लगता है
तेरी हिमायतों से मुझको डर लगता है

और–

हैं मुखौटों में छिपे दाहिर वतन के कुछ अदू
उनकी हर क़ीमत पे अब पहचान होनी चाहिए

इनकी ग़ज़लें उर्दू शायरी की रिवायती ताल और बहर पर ख़सूसी तवज्जो देती हैं और दौरे हासिल के मसाइल को हल करने के साथ-साथ मुआशरक़ी ना हमवारियों और ना इंसाफ़ियों के ख़िलाफ़ भरपूर जद्दो जहद को भी उजागर करती हैं–

अब के कौन क़बूल करेगा इक मिस्कीं का मुर्शिद होना
नाबीना को कौन कहेगा सच है उसका वाजिद होना

इनकी ग़ज़लों में ऐसे दिलकश अशआर भी शामिल हैं जो बड़े मुदल्लल अंदाज़ में लोगों को अपने ख़्यालात क़बूल करने पर मजबूर कर देंगे। इनकी नज़्म बहुत ही ख़ूबसूरत है और औरत की रानाई की बहुत ख़ूबसूरत तसवीर पेश करती है, और अंदाज़ बिल्कुल नया है। मैं दाहिर आज़मगढ़ी को मुबारकबाद और नेक ख़्वाहिशात पेश करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि उनका मजमुआ 'फ़ज़ा-ए-हस्ती' न सिर्फ़ उर्दू के अदबियों में बल्कि आम लोगों में भी क़बूलियत पाये।

–डॉ. शम्स तबरेज़

एम.ए. पी.एच.डी

फ़ज़ा-ए-हस्ती

फ़ज़ा-ए-हस्ती जनाब दाहिर आज़मगढ़ी की ग़ज़लों का दूसरा मजमुआ है। ये एक अर्सा से दाद सुख़न दे रहे हैं। उनका दायरा गौर-ओ-फ़िक्र वसी' है और वह जो कुछ सोचते हैं वही अश्'आर में ढाल देते हैं। गोया उनके अश्'आर में ज़िंदगी बोलती है और ज़िंदगी ही की कई तसवीरें मुख़तलिफ़ अंदाज़ से पेश की गयी हैं। मोहतरम दाहिर साहब हिंदी और उर्दू ज़बानों में शायरी करते हैं। बहुत कम ऐसा होता है कि दोनों बहने एक साथ रहती, बोलती हँसती, खेलती हों। इसे उर्दू का एक मो'जिज़ा भी कहा जा सकता है और दाहिर साहब को यह मलिका हासिल है कि उनकी जात में गंगा जमुनी तहज़ीब के बुनियादी अ'नासिर कारफ़र्मा हैं। उर्दू ज़बान की यह ख़ूबी है कि वह सर चढ़ कर बोलती है और जो उससे मोहब्बत करता है उसे मोहब्बत करने वाला बना देती है।

जो लोग उर्दू से मायूस हैं उन्हें दाहिर साहब से सबक़ लेना चाहिये कि वह उर्दू के सहर में गिरफ़्तार हैं और मजमुआशाई कर रहे हैं।

दाहिर साहब का कलाम अपनी सादगी व शाइस्तगी, हुस्न अदा और तर्ज़ बयान में एक नमूना है। ऐसा प्यारा अंदाज़ और तर्ज़तर्ज़ शेरगोई कि आप उसके जादू में बेक़ाबू होते जायेंगे और इसके होकर रह जायेंगे। उर्दू ग़ज़ल के सौ रूप हैं, उनमें एक रूप यह भी है और दाहिर साहब का यह अपना ईजाद कर्दा रूप हर क़ारी को मुतासिर और उसके ज़ौक़-ओ-वजदान पर असर अंदाज़ होकर रहेगा।

इस तख़लीक़ कारनामे पर नाचीज़ इन्हें दिल की गहराइयों से मुबारकबाद पेश करता है। यक़ीन है कि 'फ़ज़ा-ए-हस्ती' की पज़ीराई होगी।

—डॉ. मुहम्मद इलियास आज़मी

एम.ए. पी.एच.डी

अपनी बात

आप लोगों की दुआ से मेरी ग़ज़लों का दूसरा मजमुआ आप के सामने है। 'हद-ए-अमल से आगे लिखूँगा' के हिंदी इशाअत के बाद मैं चाहता था कि इस किताब का और आगे आने वाली किताबों की इशाअत उसकी असली ज़बान में शाई होनी चाहिये, और इसी के मद्देनज़र मैंने फ़ारसी रस्मुलख़त में इसे तैयार करना शुरू किया। इसी के साथ मेरी यह किताब 'फ़ज़ा-ए-हस्ती' भी पूरी हो गयी साथ-ही-साथ मुझे इस बात की भी ख़ुशी है कि मेरी दोनों किताबें फ़ारसी रस्मुलख़त में भी तबाअत के लिये पेश कर दी गयी हैं।

'हद-ए-अमल से आगे लिखूँगा' की हिंदी इशाअत के बाद मेरी शदीद ख़्वाहिश थी कि मैं उर्दू के अज़ीम शायर मोहतरम वसीम बरेलवी साहब से मिलूँ और अपनी पहली किताब उन्हें पेश करूँ तथा उनसे नेक ख़्वाहिशात हासिल करूँ। मेरी यह ख़्वाहिश पूरी हुई, मेरी कोशिश पर उन्होंने ख़ुशी भी जाहिर किया और लगभग एक घंटे के मुख़्तसर लम्हे में उनसे काफ़ी कुछ जानने और सीखने को मिला जिसमें ख़ास तौर से उर्दू अदब की बुनियादी बातें रहीं। मैं उनका शुक्रगुज़ार हूँ क्योंकि यह किताब उनकी हौसला अफ़ज़ाई का ही नतीज़ा है। मैं हिंदी में भी लिखता हूँ लेकिन मुझे हिंदी और उर्दू दोनों ज़बाने बराबरी के दर्ज़े से प्यारी हैं।

मैंने अपनी पहली किताब 'हद-ए-अमल से आगे लिखूँगा' में अपना तख़ल्लुस 'दानिश' इस्तेमाल किया था ताहम जैसा कि मुझे बाद में पता चला कि बहुत सारे शायर 'दानिश' तख़ल्लुस का इस्तेमाल करते हैं। चूँकि मेरी पहली किताब अभी उर्दू में शाई' नहीं हुई थी इसलिये

मैंने उत्तर प्रदेश साहित्य सभा आज़मगढ़ के जिला संयोजक अनुज श्री विजयेंद्र प्रताप श्रीवास्तव से सलाह मशविरा करके मैंने अपना तख़ल्लुस तब्दील करके 'दाहिर आज़मगढ़ी' कर लिया।

मेरे बालवास्ता सरपरस्तों प्रोफेसर प्रभुनाथ सिंह मयंक, डॉ. शशिभूषण प्रशांत, पंडित हरिहर पाठक और पंडित जनमेजय पाठक ने इस किताब की तख़लीक़ में नुमायाँ ता'ऊन किया है। मैं डॉ. शम्स तबरेज़ और डॉ. इलियास आज़मी का शुक्र गुज़ार हूँ कि इन्होंने उर्दू लिखने की हौसला अफ़ज़ाई की। मैं वसीउर्रहमान नोमानी, विजयेंद्र प्रताप श्रीवास्तव 'करुण', संतोष पांडेय और रत्नेश राय का भी शुक्र गुज़ार हूँ कि इन लोगों ने कुछ करने के लिये मुसबत माहौल बनाया।

मुझे उम्मीद है कि आप सब मेरी फ़राहम करदा ग़ज़लों और नज़्मों से लुत्फ़ अंदोज़ होंगे।

—दाहिर आज़मगढ़ी
मोबाइल 9415084488,
9335012670

मुनदरेजात

❖ नसब अपने को वो तो दूर से पहचान लेते हैं 19
❖ जल रही धरती को अब बारिश तो मिलनी चाहिए 20
❖ मिरी नज़रों की बेनूरी से अब लेगा तो क्या लेगा 22
❖ डूबती साँसों के पन में एक मसला बन गया 23
❖ बज़्म में मेरी जो आये थे वो चुपके-चुपके 24
❖ हमारे बीच की उलझन कभी सुलझती नहीं 26
❖ कुछ तो जहाँ में सबको दर्दो गिला रहे हैं 28
❖ उनके अंदाज़ अभी जल्वा शिक्न होते हैं 30
❖ सुरमई रात है फिर शै कोई मचलने को है 31
❖ ग़मों में डूबा नहीं बोलता तो फ़ाख़िर है 33
❖ मैं तेरे साथ हूँ मंज़िल की तरफ़ देख के चल 35
❖ तिरे वादों से अब मेयार जाने वाली है 36
❖ फ़लसफ़े उनके सताते क्यों हैं 38
❖ सभी के ख़ुद मसाइल हों बताते हैं किसे अपना 40
❖ ख़ुद को अपना बना के देख लिया 41
❖ मुस्तकम है ग़मे दिल हाल सुनाऊँ कैसे 43
❖ ज़बीहा करता है लेकिन कहा क़ातिल नहीं जाता 45

❖ पता जब दिल की जानिब शिरकतों का दिल से मिलता है 47
❖ मैं बरसों बाद सोया हूँ मुझे बेदार मत करना 48
❖ 'आजिज़ हूँ मगर ख़ुद का गुनहगार नहीं हूँ 50
❖ ये बादा ए सुखन भी रास है आती नहीं मुझ को 52
❖ दिल के कुछ अरमाँ थे सौंपे उनको तुम अब लौटा देना 53
❖ अब तो तनहाइयों का नूर बन गया हूँ मैं 54
❖ अब के कौन क़बूल करेगा इक मिस्कीं का मुर्शिद होना 56
❖ मैं तो बस तल्ख़ तमाज़त की बात करता हूँ 58
❖ ज़िन्दगी तेरे तक़ाज़ों का भरम रख लूँगा 60
❖ मेरी हयात को अपनी तरह से चलने दो 62
❖ दिन बदले हैं रात पुरानी फिर वो ही तनहाई है 64
❖ शख़्स हर मोतबर नहीं होता 66
❖ बारे ग़म जीस्त मेरी बन गयी है 67
❖ अपनी हस्ती का दाना हो गया हूँ 68
❖ खिड़की के एक पार रहता है 70
❖ रूह का बदन या कि जिस्म रूह बनता है 72
❖ मिरी लाख कोशिशों ने भी रोका नहीं मुझे 73
❖ वो मेरी जीस्त का नायाब-सरवत तोहफ़ा था 75
❖ उस बेटे के लिये जो माँ बाप को छोड़ गया 77
❖ कैसे कैसे लोग मिले अनजानों में 79
❖ जिगर में दूरियों का ग़म गयी नज़र ही नहीं 80
❖ एक फ़ौजी का सियासतदानों को पैग़ाम 82
❖ तल्ख़ियाँ बढ़ती रहीं जितने ही दूर हुये 83

❖ मक़ाम है यहीं से बेबसी गुज़रती रही 84
❖ तुम्हारी चाहतों को हम कभी भी ना भुला पाए 85
❖ गुज़र तो जाएगी ऐ ज़िंदगी बता क्या होगा 87
❖ घुटनों पानी, नाव चलाता रहता है 89
❖ जिस दिन से समझना बंद किया उस दिन से ही जीना... 91
❖ फ़ासले से ही चलना था तो मुड़ गए क्यों बता ही दो 93
❖ था जिसने बाँध लिया बस हमें अदाओं में 94
❖ गुजश्ता लम्हे पकड़ने की चाह कर रहा हूँ 96
❖ वादा-ए-बेवफ़ा की उल्फ़त हूँ 97
❖ रोज़ जलवत का वहम रखते हैं 98
❖ शमाँ जलती हुई पिघलती रही 100
नज़्म 101-111

ग़ज़लें

नसब[1] अपने को वो तो दूर से पहचान लेते हैं
सलासिल[2] तोड़कर अख़लाक़ की झट थाम लेते हैं

है उनके ज़ेह्न का आलम समझ आता नहीं कुछ भी
कभी अल्लाह का इब्लीस[3] का फिर नाम लेते हैं

हो गलती लाख चाहे मानना तो दूर की बातें
बड़ी दानाई[4] से उसको हमारा नाम देते हैं

किसी रिश्ते से रखा हो कभी ना वास्ता जिसने
बिगड़ते वक़्त में रिश्ते की चर्चा आम करते हैं

जो थे दाहिर सहारे तेरे ख़ुदमुख़्तार होने पर
सहारा ही नहीं देते नज़र भी फेर लेते हैं

❖

---

1. नसब = वंश, जाति, 2. सलासिल = बेड़ियाँ, 3. इबलीस = बुराई का देवता, 4. दानाई = अक्लमंदी।

जल रही धरती को अब बारिश तो मिलनी चाहिए
देर से ही हो घटा घनघोर घिरनी चाहिए

हो सड़क पर ही सही पर हो तो पूरे दम से हो
बात उठनी है तो पूरे दम से उठनी चाहिए

ले चलो उस ओर जिस जानिब है सूखी इक नदी
उस नदी की रेत से दीवार बननी चाहिए

झूठे जुमलों से रहे बनते सियासत के महल
इस महल की हर दरो दीवार ढहनी चाहिए

है शिकारी की नज़र हर शख़्स और हर गाँव पर
नफ़्रती तक़रीर से हर बज़्म बचनी चाहिए

हैं मुखौटों में छिपे दाहिर वतन के कुछ अदू[1]
उनकी हर क़ीमत पे अब पहचान होनी चाहिए

❖

1. अदू = दुश्मन।

मिरी नज़रों की बेनूरी[1] से अब लेगा तो क्या लेगा
बहुत बदनाम कर सद हैफ़[2] जब देगा तो क्या देगा

पलक से गिर गये आँसू मुसल्सल थे जो दामन पर
जिगर ज़ख़्मी किया रूमाल अब देगा तो क्या देगा

कभी था वक़्त का मारा गिरा था उठना ना मुमकिन
अभी मैं हूँ जो ताक़तवर तुवाँ[3] देगा तो क्या देगा

शमाँ की लौ बनी थी रात की मेरी नफ़स[4] साथी
फ़जर ख़ुर्शीद[5] का आलम अगर देगा तो क्या देगा

ख़ला[6] में मंजिलें बिस्यार[7] मैंने चुनना था दाहिर
जो भूला राह वो हमराह अब देगा तो क्या देगा

❖

1. बेनूरी = ज्योतिहीनता, 2. सद हैफ़ = सौ सौ अफसोस, 3. तुवाँ = ताक़त, 4. नफ़स = क्षण, पल, 5. ख़ुर्शीद = सूर्य, 6. ख़ला = ब्रह्मांड, 7. बिस्यार = बहुत।

डूबती साँसों के पन में एक मसला बन गया
था नसब[1] में अपने ही मैं फिर भी तन्हा बन गया

पैर खींचा तिफ़्ल[2] ने जिसको सिखाया चलना था
मुख़्तसर[3] दी थी जिसे मालिक जगह का बन गया

अश्क़ कुछ ऐसे थे निकले कुछ हुआ ऐसा दिखा
सामने ही वो खड़े थे अक्स धुँदला बन गया

हमने जाना था ख़ुदा को रह्मवर के नाम से
इस्तिलाहे लफ़्ज़[4] दहशत का था मसला बन गया

तर्जुमा उलफ़त का कुछ ऐसा था दाहिर कर लिया
जिन पे करते नाज़ वो ज़िल्लत का सामाँ बन गया

❖

1. नस्ब = वंश, 2. तिफ़्ल = बच्चा, 3. मुख़्तसर = अल्प काल के लिये, 4. इस्तिलाहे-लफ़्ज़ = शब्द की व्याख्या या अर्थ।

बज़्म में मेरी जो आये थे वो चुपके-चुपके
मेरे मुद्दे को चुरा ले गये चुपके-चुपके

तुम मेरी चाल के जलवे कहाँ से लाओगे
जूते मेरे चुरा के निकले हो चुपके-चुपके

अपनी शोहरत के लिये बज़्म बदलता ही था
लोग अब दूर से कट जाते हैं चुपके-चुपके

मुझ को मालूम न था वज़्न का दम बटवे का
खाली होते ही खिसकने लगे चुपके-चुपके

शह्र की रौनक़ें किसके लिये हैं कार-आमद[1]
रिश्ते इंसान के अब मर रहे चुपके-चुपके

है जो वीराँ कभी गुलज़ार हुए थे दाहिर
खामुशी हो गयी है जेह्न में चुपके-चुपके

❖

1. कार-आमद = काम आने वाले।

हमारे बीच की उलझन कभी सुलझती नहीं
मगर हक़ीकतन उलझन की बात रहती नहीं

सुना है शह्र में तेरे वफ़ाएँ बिकती हैं
मैं हूँ ग़रीब तो मुझको उधार मिलती नहीं

कि उनकी बज़्म में दरिया ए मय ही बहता है
हमारे गाँव की जानिब नदी निकलती नहीं

बनी जो उनकी कहानी ज़मीं हक़ीक़त पर
मगर शिनाख़्त है गुम रहती उफ़ ये छपती नहीं

गया है जो तिरी ही बज़्म से खफ़ा होकर
चला ही आएगा अलहदगी उससे सहती नहीं

तलाश करता हूँ चेहरे की उन लकीरों में
हमारे अक्स की परछाइयाँ ही दिखती नहीं

तिरे ख़याल में दाहिर बहुत कशाकश[1] है
तुम्हारे कैफ़[2] की सूरत कुछ और निकलती नहीं

❖

1. कशाकश = उलझन, असमंजस, 2. कैफ़ = आनन्द।

कुछ तो जहाँ में सबको दर्दो गिला रहे हैं
मेरी फ़िज़ाँ पे चस्पा कुछ सिलसिला रहे हैं

टूटा है कुछ फ़लक[1] से उनको ख़बर नहीं है
वो आस्ताने दिल पर यह दिल जला रहे हैं

वो पैंतरे सियासी माहिर बहुत पुराने
वो आस्तीं में अपने साँप इक सिला रहे हैं

भेजा मुझे दरीचे[2] बोले लगे ही रहना
वो फ़ासले बनाकर नौ गुल खिला रहे हैं

माज़ी[3] बदल गया है मंज़र[4] है कुछ अलग-सा
साक़ी बहक रहे हैं, मैकश पिला रहे हैं

दाहिर अजब-ग़ज़ब है याँ ज़िंदगी बशर[5] की
उनकी है अक्सरीयत[6] ताबाँ[7] क़ला[8] रहे हैं

❖

1. फ़लक = क्षितिज, 2. दरीचा = छोटा दरवाज़ा जिससे झाँकते हैं, 3. माजी = भूतकाल, 4. मंजर = दृश्य, 5. बशर = मानव, 6. अक्सरीयत = बहुमत, 7. ताबाँ = प्रकाशमान, 8. क़ला = छल, फ़रेब।

उनके अंदाज़ अभी जल्वा शिक्न[1] होते हैं
मेरे अहसास अभी जिंदा ज़ेहन होते हैं

मेरा ये ग़म कि यग़ाना[2] बना लिया दिल में
मुझको क्या इल्म ये रिश्ते भी ग़ुस्न[3] होते हैं

जो कभी थकते नहीं थे वफ़ा की कसमों से
उनके कूचे में रक़ीबों के जश्न होते हैं

उठती गिरती रहीं लहरें वफ़ा की ज़हनों में
जानते जीस्त लगी कैसे हुस्न होते हैं

जिनके आने से हमें होती थी नौ-ख़ेज़ खुशी
ज़िक्र सुन उनका मिरे दर्द ज़ेहन होते हैं

❖

---

1. जल्वा शिकन = प्रदर्शित, दिखाई पड़ना, 2. यग़ाना = परिवार के अंदर शामिल,
3. गुस्न = कमजोर।

सुरमई रात है फिर शै कोई मचलने को है
और फिर शर्म से गुंचे में सिम्टने को है

है कोई नूर जो नाज़िल है बर्फ सा उस पर
मेरे जज़्बात की गर्मी में ही पिघलने को है

देख कर उसको तो कर जाऊँ जो मैं बरगश्ता[1]
नरगिसी जिस्म की ख़ुशबू फ़िज़ा बदलने को है

पुश्त से ही नहीं हटती नज़र ना जाने क्यूँ
आइना रुख़ को दिखाने में ही झिझकने को है

तू समन्दर को ही आग़ोश में ले ले अपने
सुना है आज ही दरिया नया निकलने को है

गुल कभी ऐसे नहीं खींचता है दाहिर को
कुछ ना कुछ आज नया ज़ीस्त में तो होने को है

❖

1. बरगश्ता = प्रतिकूल।

ग़मों में डूबा नहीं बोलता तो फ़ाख़िर[1] है
किसी को क्या पता बद-वक़्त का मुसाफ़िर है

कहा था जिसको यही तो वफ़ा का मुश्तरी[2] है
साफ़ जब धुंद हुई थी तो पाया ताजिर[3] है

था वो इक शख़्स जो दम भरता था वफ़ा की मिरी
वक़्त जब आया तो निकला वही मुनाज़िर[4] है

राह बदला मेरी मुश्किल में आफतें थीं मिली
जहाँ पहुँचा मेरी दुश्वारियाँ भी हाज़िर है

ज़मीं भी तप रही है आसमाँ सुलगता हुआ
अब्र भी बँट गया लगता नहीं कि 'आमिर[5] है

हमें मालूम है मँझधार चीरने का हुनर
लोग कहने लगे हैं इन दिनों कि काफ़िर है

ग़ौर से देख कोई बूँद है गिरी दाहिर
तेरी नौ ख़्वाहिशों पे है या फिर मुहाजिर है

❖

1. फ़ाख़िर = अहंकारी, 2. मुश्तरी = खरीदार, 3. ताजिर = विक्रेता 4. मुनाजिर = विरोधी, 5. 'आमिर = बसाने वाला, आबाद करने वाला।

मैं तेरे साथ हूँ मंज़िल की तरफ़ देख के चल
निहाँ[1] चालों को ज़रा मुख़्तसर[2] सा रोक के चल

तिरे चेहरे की वो ताबीर[3] छिप नहीं है रही
तू मिरा दोस्त है तू अहद सारे तोड़ के चल

तू जो आगे रहा तो पैर खींचता ही रहा
मैं ठहर जाता हूँ तू मुझसे आगे दौड़ के चल

जब तलक आगे रहा मैं तेरा रक़ीब रहा
मैं हूँ साकत कि मेरा इंतक़ाम सोच के चल

कभी दाहिर जो हुबेजाह[4] तूने रखा नहीं
तन्हा वाजिब तू हक़ीरो[5] रक़ीब छोड़ के चल

❖

1. निहाँ = गुप्त, 2. मुख़्तसर = अल्पकालिक, 3. ताबीर = भाव, 4. हुबेजाह = महत्वाकांछा, 5. हक़ीर = नीच।

तिरे वादों से अब मेयार[1] जाने वाली है
दयारे आम में ये बात उठने वाली है

बनाया औरा पैदा कर लिया तकरीम भी
तिरी मासूमियत की पोल खुलने वाली है

विसाले बज़्म से मुँह मोड़ना आसाँ नहीं
मचलते अरमाँ की फिर बात होने वाली है

तड़प के टूटा था जो शीश-ए-दिल ज़ौके तलब[2]
उसी के हश्र की बारात आने वाली है

कुरेदो मत मिरे जख्मों को तो भर जाने दे
तिरे मरहम की वो तासीर[3] जाने वाली है

कहीं दाहिर तुम्हारे वस्ल[4] की फ़रियादों से
कली ओ गुल विसाले यार[5] होने वाली है

❖

1. मेयार = मानक,स्तर,गुण, 2. ज़ौके तलब = खोजने की इच्छा, 3. तासीर = प्रभाव, 4. वस्ल = मिलन, 5. विसाले यार = प्रेमी से मुलाक़ात।

फ़लसफ़े[1] उनके सताते क्यों हैं
मेरे जज़्बात जगाते क्यों हैं

नज़्म ख़ुद आज परीशाँ इसपर
उसके अशआर[2] बुलाते क्यों हैं

बसते जब ख़्वाब हैं आँखों में मेरे
बंद हों आँख तो आते क्यों हैं

घाव तो सूख चुके हैं अब तक
दाग़ अहसास दिलाते क्यों हैं

अब नहीं कोई खरीदारे ग़म
अक्स[3] सपनों में बन आते क्यों हैं

मुँह से कुछ जिसने ना बोला दाहिर
उनसे अलगाव रुलाते क्यों हैं

❖

1. फ़लसफ़े = फिलासफी,दर्शन, 2. अशआर = शेर का बहुबचन, 3. अक्स = बिम्ब।

सभी के ख़ुद मसाइल हों बताते हैं किसे अपना
यहाँ हरचंद[1] धोके हैं बनाते हैं उसे अपना

मुझे तो अब भी नामालूम क़िस्स-ए-अस्ल जन्नत का
उसी की ताब[2] कठपुतली बनाता है मुझे अपना

मिरे बेदाग़ दामन का उसे है ख़ौफ़ कुछ ऐसा
सबब[3] हरजाई होने का बताता है मुझे अपना

ना जाने किस जगह पे बेचकर इंसानियत आया
सबक़ इंसानियत का अब पढ़ाता है मुझे अपना

नज़र अंदाज़ हस्ती हूँ मेरा क्या लगता है दाहिर
उसी की चाहतों का जुज़[4] बताता है मुझे अपना

❖

1. हर-चंद = यद्यपि, कितनी ही तरह, 2. ताब = ताक़त, जोर, 3. सबब = कारण
4. जुज़ = अंश, हिस्सा।

ख़ुद को अपना बना के देख लिया
हमने सब आजमा के देख लिया

थे करिश्माई के बयाँ जिनके
उनके नज़दीक जा के देख लिया

कुछ फ़राहम[1] हों ख़ुशियाँ शायद तो
नज़्म भी गुनगुना के देख लिया

सुनते थे शख़्स ख़ुशनुमा है बहुत
हमने भी मुस्कुरा के देख लिया

उनकी तो आँख ही हटी ना थी
अपनी नज़रें झुका के देख लिया

लोग कहते थे कि ये ऐसा ही है
हमने इंसाँ बदल के देख लिया

था तग़ाफ़ुल[2] बहुत किया दाहिर
हमने सब कुछ लुटा के देख लिया

❖

1. फराहम = इकट्ठा, 2. तग़ाफ़ुल = उपेक्षित।

मुस्तकम[1] है ग़मे दिल हाल सुनाऊँ कैसे
बातों बातों में उसे बात बताऊँ कैसे

बारिशे नूर हो और हुस्न के चर्चे हों मगर
दिल की बाजी जो है हारा तो जिताऊँ कैसे

मैं तो बेजान सितारा हूँ कोई दर ही नहीं
फिर से टूटा हूँ फ़लक से ख़ुद उठाऊँ कैसे

बासी फूलों की तरह फेंक दिया हो जिसने
उससे ला-फ़ानी[2] की उम्मीद लगाऊँ कैसे

मेरे चेहरे ने ली तासीर[3] किसी आइने से
दिल के जज़्बात नुमायाँ हों छिपाऊँ कैसे

जो जो गुज़रा है मेरे साथ निहाँ[4] है अब तक
मुझमें जो जज़्ब वही राज़ बताऊँ कैसे

जो हैं बेपरवा वो हक़ हुस्न भला क्या समझें
हैं इबादत में ग़लत उनको जताऊँ कैसे

सामराजे दिले मुज़्तर[5] से निकलता ही नहीं
ये बहुत ज़िद्दी है इस हाल मनाऊँ कैसे

अपने क़दमों में कभी जिसने ना दाहिर दी जगह
उसको अब आज दिलनवाज़[6] बनाऊँ कैसे

❖

1. मुस्तकम = स्थिर, 2. ला-फ़ानी = अमरत्व, शाश्वत, 3. तासीर = असर, प्रभाव, 4. निहाँ = छिपा हुआ, 5. सामराजे-दिले-मुज़्तर = प्रेम व्यथा में तड़पते हुये ह्रदय का साम्राज्य, 6. दिलनवाज़ = प्रेमपात्र, महबूब।

ज़बीहा करता है लेकिन कहा क़ातिल नहीं जाता
है अनपढ़ मुंतखब[1] लेकिन कहा जाहिल नहीं जाता

यहाँ पर लोग दीवाने पड़ा है आँख पर पर्दा
भरी मजलिस[2] में कहता है कहा बातिल[3] नहीं जाता

दहाई सालों से लटके मुकदमे अब भी ज़िंदा हैं
मगर है ख़ौफ़ इतना कि कहा काहिल नहीं जाता

लगे हैं लोग ख़ुदगर्ज़ी मुनासिब नामुनासिब क्या
यहाँ अल्लाह को भी अब कहा 'आदिल[4] नहीं जाता

बँटे हैं जातियों में फायदे के सब तक़ाज़े हैं
भले आलिम[5] हों मौज़ू[6] के कहा क़ाबिल नहीं जाता

है दहशतगर्दी का जलवा बशर ख़ूँबारी से मरता
तुम्हारी इस निज़ामत[7] को कहा ग़ाफ़िल[8] नहीं जाता

भँवर से कैसे निकले थे किनारे आए थे दाहिर
दिखा आलम तो सोचा गर कहा साहिल नहीं जाता

❖

---

1. मुंतख़ब = निर्वाचित, 2. मजलिस = सभा, 3. बातिल = झूठा, 4. ‘आदिल = इंसाफ करने वाला, 5. आलिम = विद्वान, 6. मौज़ू = विषय, 7. निजामत = व्यवस्था, सरबराही, 8. ग़ाफ़िल = लापरवाही।

पता जब दिल की जानिब शिरकतों का दिल से मिलता है
तभी मुद्दत से सोई हसरतों में कुछ मचलता है

तुम्हारे ज़िक्रे एहसासे बदन हासिल[1] से है ज़ाहिर
नदी के दिल में हलचल है पता साहिल से चलता है

मुनाज़िर[2] हूँ मैं उसका और कुछ चाहत नहीं मुझको
हसद[3] मसरूफ[4] आशिक़ है मेरे दीदार जलता है

दिलों में जज़्ब शब-सरगोशियों का क्या करे दाहिर
किया बेरहमी क्यूँ बरपा पता क़ातिल से चलता है

चलो हम मान लेते हैं ग़मे फ़ुरक़त[5] में जीना है
मगर इक चाहने वाला बड़ी मुश्किल से मिलता है

❖

1. ज़िक्रे-एहसासे-बदन हासिल = शरीर की अनुभूति की चर्चा के परिणाम, 2. मुनाज़िर = देखने वाला, 3. हसद = ईर्ष्या, 4. मसरूफ = व्यस्त, 5. फ़ुरक़त = वियोग।

मैं बरसों बाद सोया हूँ मुझे बेदार[1] मत करना
जमाने मुझको खलवत[2] से अभी बेजार[3] मत करना

महल हसरत का हासिल है उसी में खाब हैं मेरे
गुज़ारिश है उसे ज़ालिम कभी एजार[4] मत करना

मिरे है पास सोजे दिल[5] की दौलत अह्दे गुमगश्ता[6]
मुझे ऐ दुनिया वालों इससे फिर नादार[7] मत करना

तिरी आँखों में कुछ ऐसी ख़लिश[8] हमने जो देखी है
बड़ी मुश्किल से निकला हूँ जिगर के पार मत करना

मेरी ख़ुद्दारी के क़िस्से फ़ज़ा में अब भी ज़िंदा हैं
बता अपना बिचारापन मुझे लाचार मत करना

तुम्हारी एशो इशरत में कशाकश इतने हैं दाहिर
मेरी ग़ुरबत है बेहतर मुझको फिर ईसार[9] मत करना

❖

1. बेदार = जाग्रत, 2. खलवत = एकांत, 3. बेज़ार = अप्रसन्न या खिन्न, 4. एजार = किराए पर देना, 5. सोज़े दिल = दिल का दर्द, 6. अह्दे गुमगश्ता = खोए हुए दिनों की, 7. नादार = कंगाल, मोहताज, 8. ख़लिश = चुभन, 9 ईसार = मालदार या धनवान होना।

‘आजिज़[1] हूँ मगर ख़ुद का गुनहगार नहीं हूँ
मैं दिल का तकद्दुस[2] हूँ कि आज़ार[3] नहीं हूँ

जो लम्हे अँधेरे से ज़िया[4] के तो थे हामिल[5]
मैं उसकी नवाजिश का तलबगार नहीं हूँ

मैं खोजता हूँ शब के अंधेरे निहाँ[6] सूरज
हद है कि तलाशी का मैं हक़दार नहीं हूँ

इक बुत मिरे जेहन में मचलती है हमेशा
मैं हुस्न के शैदाई की बाज़ार नहीं हूँ

इस दुनिया ने मुझको तो बहुत दर्द दिया है
घायल हूँ मगर अब भी मैं बेज़ार[7] नहीं हूँ

दाहिर से क्या उम्मीद करे अदल[8] के बा'इस
है उनको ये उम्मीद कि मेयार[9] नहीं हूँ

❖

1. 'आजिज़ = लाचार, तंग, 2. तकद्दुस = पवित्रता, 3. आज़ार = कष्ट, प्रेतबाधा, जंजाल, व्यसन, 4. ज़िया = प्रकाश, 5. हामिल = वाहक, 6. निहाँ = छिपे हुए, 7. बेज़ार = खिन्न, 8. अदल = बेहतर रहनुमाई करने वाला, 9. मेयार = अच्छे बुरे की पहचान करने वाला।

ये बादा ए सुखन[1] भी रास है आती नहीं मुझ को
मेरे हालात की ख़बरें बताती है नहीं उस को

मेरे लिखने ना लिखने से उसे क्या फ़र्क़ पड़ता है
कि दौरे ख़ुद परस्ती में सुनायेगा तू अब किस को

शनासाई[2] की बातें हो गयीं बीते जमाने की
नये इस दौर में हम-नफ़स[3] भी सुनते नहीं सब को

बदलते वक़्त ने बदला वज़ाहत रब्त रिश्तों[4] का
कहा था, वक़्त है वो नासमझ है भूल जा उसको

तिरा दाहिर हुजूमे तिश्ना-लब[5] है सहरा[6] सरहद पर
परीशाँ होने का पैग़ाम[7] अब देगा तू क्या उस को

❖

1. बादा ए सुखन = कविता की मदिरा या संगीत, 2.शनासाई = जान-पहचान, 3.हम-नफ़स = गहरे रिश्ते वाला, 4.वजाहत रब्त रिश्तों = सम्बंधों के जुड़ाव की व्याख्या, 5. हुजूमे तिश्ना-लब = प्यासे होठों वाले लोगों का समूह, 6.सहरा = रेगिस्तान, 7. पैग़ाम = संदेश।

दिल के कुछ अरमाँ थे सौंपे उनको तुम अब लौटा देना
कुछ जगहों हैं धुँधली यादें यादों को अब भटका देना

खिलवत[1] मेरे जेहन में डूबी क्या उजला और अब क्या काला
दाग़े रुसवाई[2] क्या डर अब उस चाहत को लौटा देना

तेरी रअनाइयों[3] की सरकश[4] सरगोशियों[5] से हद हूँ भूला
हद से आगे ना बढ़ जाऊँ मेरी हद को लौटा देना

इन पथराई आँखों को अब आशा क्या कुछ माज़ी से हो
क़तरे क़तरे करके निकले उन अश्क़ों को लौटा देना

हम आग़ोशी[6] ग़म की तारीकी[7] दाहिर तेरी क़िस्मत सी
गर नालाँ[8] की बातें हों तो अपना ही नाम बता देना

❖

1. खिलवत = एकांत, 2. दाग़े रुसवाई = बदनामी का दाग, 3. रअनाई = सौंदर्य का लावण्य, 4. सरकश = उद्दंड, 5. सरगोशी = फुसफुसाहट, 6. हम आगोशी = परस्पर आलिंगन, 7. तारीकी = अंधेरा, 8. नालाँ = मजबूर, त्रस्त, फ़रियादी।

अब तो तनहाइयों का नूर बन गया हूँ मैं
अपने ही लोग हैं मजबूर बन गया हूँ मैं

शाख़ पर बैठ के फ़रमान देता है सबको
हूँ तो नज़दीक मगर दूर बन गया हूँ मैं

काम तारीफ़ के काबिल किया बड़ी शिद्दत
पर शिकायत से ही मशहूर बन गया हूँ मैं

'आरियत[1] में थे वो माँगे ज़मीर को मेरे
कर के इंकार तो मग़रूर[2] बन गया हूँ मैं

शौक से लोग किया करते जिसका इस्तक़बाल
वक़्त गुज़रा है तो दस्तूर[3] बन गया हूँ मैं

मैं रवायत में जो तरमीम[4] चाहता हूँ मगर
लोग कहने लगे मख़मूर[5] बन गया हूँ मैं

सायबानों में मिरे धूप का इज़ाफ़ा है
ज़िल्लतो जहल[6] से भरपूर बन गया हूँ मैं

मैं हूँ दाहिर तू मिरे जेह्न से क्यों खेलता है
आरज़ी[7] मस्ले हैं महसूर[8] बन गया हूँ मैं

❖

1. 'आरियत = उधार, 2. मग़रूर = घमंडी, 3. दस्तूर = नियम, 4. तरमीम = संशोधन 5. मख़मूर = नशे में धुत, 6. जहल = मूर्खता, 7. आरज़ी = अस्थाई, 8. महसूर = चारों तरफ से घिरा होना।

अब के कौन क़बूल करेगा इक मिस्कीं[1] का मुर्शिद[2] होना
नाबीना[3] को कौन कहेगा सच है उसका वाजिद[4] होना

चाँद के सब दीवाने हैं और पढ़ते क़सीदे[5] उसके ही हैं
इस आलम में कौन तनाज़े[6] कर चाहेगा नाजिद[7] होना

जो हो वजह मेरी अलहदगी महबूबा से करवाने की
बात उठे जब बज़्म में इसकी क्यों चाहेगा शाहिद[8] होना

उनका तमद्दुन[9] उनकी महफ़िल सर को झुकाए बैठें हैं सब
मैं जमहूर हूँ मेरा फ़र्ज़ है उस महफ़िल में साजिद[10] होना

अक्सरियत[11] का दौर है यारों मान मुनासिब गैरमुनासिब
दौरे शुजा'अत[12] है ही नहीं तो क्यों चाहेगा वाहिद[13] होना

अहसानों के बीच दबा है कुछ लोगों ने माना माजिद[14]
दाहिर चुप कर देख तमाशे बेहतर तेरा ज़ाहिद[15] होना

❖

1. मिस्कीं = दरिद्र, कंगाल, 2. मुर्शिद = राह दिखाने वाला, 3. नाबीना = अंधा, 4. वाजिद = खोज करने वाला, 5. क़सीदे = तारीफ़ में की गई कविता, 6. तनाज़ा = विवाद, लड़ाई, 7. नाजिद = जेमिनी के बायीं तरफ एक चमकता सितारा, 8. शाहिद = गवाह, 9. तमद्दुन = संस्कृति, 10. साजिद = सिर झुकाना, 11. अक्सरियत = बहुमत, 12. शुजा'अत = वीरता, साहस, 13.वाहिद = इकलौता, 14. माजिद = सम्माननीय बुजुर्ग, 15. ज़ाहिद = सांसारिक माया से मुक्त होकर भजन गाने वाला।

मैं तो बस तल्ख़[1] तमाज़त[2] की बात करता हूँ
ख़ुद की बस ख़ैर मनाने की शग़ल[3] रखता हूँ

बादशाही की तो जो लत लगी है मुझको उस
रख़्त[4] हर तरह सियासत का साथ रखता हूँ

मैंने बाँटा है वतन को धरम 'अक़ीदा में
और अब जातियों के दम का अहल[5] रखता हूँ

मुझको क्या हक़ कि मैं उसको ही ख़ुद परस्त कहूँ
मैं तो ख़ुद रब को मुसीबत में याद करता हूँ

मैं सियासत के सबब मुल्क बेच कर खाऊँ
है हिमायत मुझे जमहूर की मैं सकता हूँ

सुन ऐ दाहिर तू उठो अहद[6] मुल्क की लेकर
है ज़रूरत जो हिफ़ाज़त वतन की करता हूँ

❖

1. तल्ख़ = कटु, 2. तमाज़त = भीषण गर्मी, 3. शग़ल = मन बहलाव का काम
4. रख़्त = उपकरण, संसाधन, 5. अहल = अनुयायी, पात्र, 6. अहद = प्रतिज्ञा।

ज़िन्दगी तेरे तक़ाज़ों[1] का भरम रख लूँगा
मैं इसी हाल गुज़रने का अमल कर लूँगा

मुझको मा'लूम है आवाज़ कोई ना देगा
अपनी बेदारी ए अहसास[2] को कम कर लूँगा

फिर से मुड़ कर कोई देखे मुझे या ना देखे
ज़ौके ख़ुश बख़्त[3] भी महसूस न हो रह लूँगा

जिनके किस्से बड़े पुरजोश हुआ करते थे
उनके ए'राज़ो[4] फ़रारी का भी ग़म सह लूँगा

लग गयी आग़ दिलों में धुआँ-सा है फैला
कल ख़बर बननी है जाने दो पता कर लूँगा

घर से निकला था मगर शहर में तो घर ना मिला
थे किराये के मकाँ गाँव में ही रह लूँगा

फिर ख़्यालों के नये पर हैं मचल कर निकले
माज़ी सिलवट को भी दाहिर सँजो के रख लूँगा

❖

1. तक़ाज़ा = उद्देश्य, अभिप्राय, 2. बेदारी ए अहसास = अनुभूति की चेतना, 3. ज़ौके ख़ुश बख़्त = भाग्यशाली होने का आनंद, 4. ए'राज़ = मुँह मोड़ लेना।

मेरी हयात को अपनी तरह से चलने दो
जो ढल रही है उसे क़ायदे से ढलने दो

सुनो हवा तू किसी और सिम्त जाके बहो
चिराग़ जलते हैं उनको सुकूँ से मरने दो

अकेले आए थे ओ तन्हा ही तो जाना है
बहुत उदास हूँ मुझको अकेले जीने दो

हयात गुज़री है मेरे हिसाब बाक़ी हैं
अभी सुकून है मुझको हिसाब लिखने दो

नहीं बिबाक़ हूँ सबसे मैं इस ज़माने में
अगर कहूँ तो सुनो आज मुझको कहने दो

ढली है शाम परिंदे हैं मुड़ चुके घर को
किराए का है मकाँ घर पे मुझको जाने दो

हवा खराब थी दाहिर चिराग़ ख़ूब जला
ख़ुदा के होने का मुझको सबूत देने दो

❖

दिन बदले हैं रात पुरानी फिर वो ही तनहाई है
माज़ी की कुछ यादें फिर से महबस[1] बनकर आई हैं

नन्हें परिंदे आज घरों में अपना खजाना खोजे हैं
उनके निवाले साँप ने ले ली सिर्फ ग़िलाज़त[2] पाई है

जो वीरान है कितनी रौनक है यादों में जज़्ब मेरे
अब भी तू मा'बूद[3] है मुझको 'अजम[4] तेरी रानाई है

सय्यारा[5] है जीवन अपना चैनो सुकूँ का 'अदम[6] तारी
फरियादों में जोर नहीं है बस केवल रुसवाई है

मैं हूँ नाव बिना पतवार की साहिल छूटा बहता हूँ
बेदर की अब लहर ठिकाना चाहे भँवर-गहराई है

वापस भी अब जाना चाहूँ मुमकिन अब तो है ही नहीं
मैं दाहिर हूँ बढ़ता आया मुड़ कर राह ना पाई है

❖

1. महबस = कारागार, 2. ग़िलाज़त = कचरा, 3. मा'बूद = पूजने योग्य, 4. अजम= संगीत : काफ़ी, सारंग, 5. सय्यारा = घूमने वाला तारा, 6. 'अदम = अभाव।

शख़्स हर मोतबर[1] नहीं होता
जो उधर है इधर नहीं होता

आज है कल को कोई क्या जाने
लम्हा भर में नज़र नहीं होता

मैंने अपनो में जाके देख लिया
अपना है उम्र भर नहीं होता

हस्त्र ताइर[2] का लौटकर आना
मुश्तक़िल उनका घर नहीं होता

उम्र के इस पड़ाव पर दाहिर
कोई पिछला पहर नहीं होता

❖

1. मोतबर = भरोसेमंद, 2. ताइर = चिड़िया।

बारे ग़म[1] जीस्त मेरी बन गयी है
शायरी बज़्म से अब हट गयी है

हादसे इतने हुये ज़िंदगी में
अब तो आदत सी मेरी बन गयी है

रोने को लोग तो रोते होंगे
मेरी आँखों की चमक मर गयी है

मुझसे मिलना है तो मिल ले आकर
मेरी क़िस्मत भी ख़लिश[2] बन गयी है

हाल दाहिर ये हुआ है मेरा
छाँव भी अब तो फ़ना बन गयी है

❖

1. बहरे ग़म = दुखों का बोझ, 2. खलिश = चुभन।

अपनी हस्ती का दाना हो गया हूँ
ख़ुद की मय्यत उठा के सो गया हूँ

दर्द की तो ज़ुबाँ नहीं होती
ऐसा मैं बेज़ुबान हो गया हूँ

अपनी दुश्वारियों का करके हिसाब
आज मैं बेहिसाब हो गया हूँ

उनके दिल में जो मैं उतर न सका
लौट कर अपने दिल में खो गया हूँ

दर्द भी दिल में हम दरद भी साथ
ऐसी बस्ती का सामाँ हो गया हूँ

बज़्म में रंग है रवानी नहीं
तन्हा दाहिर बसर का हो गया हूँ

❖

खिड़की के एक पार रहता है
फ़लसफ़े ज़िंदगी के कहता है

कामयाबी सफ़र है या मंज़िल
इक सिरा दूसरे से मिलता है

शोर करते हैं रात के मंज़र
दिन का सन्नाटा चुप ही रहता है

मैं ज़रा दूर क्या निकल आया
मेरा साया भी दूर भागता है

जबसे मालिक ने लूटा है गुलशन
पासबाँ भी ख़ामोश रहता है

जो ख़यालों में था बना फ़ौलाद
साथ तबदीलियों के चलता है

यूँ ही तन्हा गुज़र मैं जाऊँगा
शख़्स अपने में उलझा रहता है

मोतबर मेरा सुनते हैं दाहिर
दुश्मनों से ख़याल लेता है

❖

रूह का बदन या कि जिस्म रूह बनता है
अब ना बिकता है तो बज़्मे ज़िया[1] में बटता है

अब तजुर्बों का सामाँ बन गया हूँ ख़ुद इस दम
मेरा ज़ेहन मेरे अंदर नतीजे लिखता है

ज़िन्दगी की सच्चाई वक़्त बदल जाती है
तेरा ही मुकाबिल[2] तेरे तेरा न रहता है

और यह है कि तनहाई ना इम्काँ[3] होती है
हाल ये है कि घंटो तन्हा बैठा रहता है

कुछ तो कहती हैं ये ख़ामोशियाँ मेरी दाहिर
वो इरादतन ही ख़ामोशी ओढ़े रहता है

❖

---

1. बज़्मे ज़िया = चमक दमक की महफिल 2. मुकाबिल = सामने (इसका तात्पर्य यहाँ अपनो से है), 3. इम्काँ = अहसास।

मिरी लाख कोशिशों ने भी रोका नहीं मुझे
उसे देखता ही रह गया देखा नहीं मुझे

सवालात मेरे जेह्न में थे घूमते रहे
थी कोई वजह ज़रूर जो समझा नहीं मुझे

उसे इल्म ही नहीं था शबे आख़री[1] है ये
मिरी रूह जा रही थी तो देखा नहीं मुझे

मचल के वो डगमगाई मिरी जाँ ब हक़[2] हुई
समाँ[3] था दिया नज़र का असासा नहीं मुझे

मिरे हादसों की इतनी बड़ी दास्तान है
मिरे दिन कभी न बदले सँभाला नहीं मुझे

तिरी ज़िन्दगी में आने से कुछ ऐसा ही हुआ
किसी हाल में जहाँ ने भी छोड़ा नहीं मुझे

ये दाहिर भी इस जहाँ में बताता नहीं मुझे
कहाँ खोई रहमतें हैं मिलाता नहीं मुझे

❖

---

1. शबेआखिरी = आख़िरी रात, 2. जाँ ब हक़ = प्राण निकल जाना 3. समाँ = समय, दृश्य।

वो मेरी जीस्त का नायाब-सरवत[1] तोहफ़ा था
वो मेरा दोस्त था वो ग़ैर ना था अपना था

रखा था दिल के गोशों में सजाकर के उसे
बुरे जब दिन थे आए आस्तीं से निकला था

तुम्हारे हाथ में खंजर पता था ही नहीं
लगी थी चोट जब तुम थे गिरे तो देखा था

सँभल कर पैर रखना सामने मेरे ऐ दोस्त
जगह ये है वही जो मेरी ख़ातिर खोदा था

मुझे तो ख़ौफ़ मेरे दुश्मनों का था नहीं
वो तो इक दोस्त का चाकू था गर्दन उतरा था

मिली थी दुश्मनी जो दोस्ती के परदे में
वही दाहिर बहुत शिद्दत से तुझसे मिलता था

❖

1. सरवत = धन।

उस बेटे के लिये जो माँ बाप को छोड़ गया

किया जो वादा बिना सोचे उसका क्या होगा
पड़ेगी करनी नदामत[1] ज़ियादा क्या होगा

मुआइने[2] वफ़ा होंगे बढ़ेगी बेचैनी
तड़प-तड़प ही उठोगे वफ़ा का क्या होगा

किया जो तुमने उसे सह लिया था गम न किया
पलट न आए तेरे पर नुमायाँ[3] क्या होगा

हाँ थक तो जाओगे बच्चे तुम्हें नहीं मालूम
हमारे बाद तेरी ख़्वाहिशों का क्या होगा

मुझे है लेना क्या अपनी तो कैसे बीत गयी
तिरी तो पूरी पड़ी है शबा[4] का क्या होगा

हमारे थे ही नहीं क्यों गिला करें तुमसे
जो बदला वक़्त ने ख़ुद को तुम्हारा क्या होगा

तू तो है तू न रहा ना तेरा वजूद रहा
बना है बुत तो तिरा अब भरोसा क्या होगा

असास[5] ख़ुद के नफ़े को बना लिया दाहिर
कभी जो हम न हुए इस नफ़ा का क्या होगा

❖

---

1. नदामत = प्रायश्चित, 2. मुआइने = परीक्षा, 3. नुमायाँ = दिखाई पड़ना, 4. शबा= रात, 5. असास = नींव।

कैसे कैसे लोग मिले अनजानों में
बन बैठे अपने इतने बेगानों में

तुम भी आओ मिल बैठें हम महफ़िल में
शायद कुछ मिल जाए इन ऐलानों में

इंसाँ उनको पाया जब नज़दीक गए
जिनके चर्चे होते थे हैवानों में

तेरी रहमत के अंजामों से डर कर
फिर दीवाना एक बढ़ा दीवानों में

दाहिर जैसा याँ कोई किरदार[1] नहीं
शायद कोई मिल जाए अफ़सानों[2] में

❖

1. किरदार = पात्र, 2. अफ़साना = कहानी।

जिगर में दूरियों का ग़म गयी नज़र ही नहीं
दुआ जो दिल से न निकली हुआ असर ही नहीं

चले तो चलने को निकला है क़ाफ़िला भारी
किधर है जाना है इसकी कोई ख़बर ही नहीं

है देखा किसको फ़लक[1] से बलन्द जाते हुए
यहाँ तो गिरते ही देखा रही कसर ही नहीं

सभी लगे हैं बड़े जज़्बे से ख़ुशी अपने
पड़ोसी जब्र[2] से तड़पा हुई ख़बर ही नहीं

बग़ावती थे कभी जज़्बे जिनके ज़ाबर[3] थे
बिके थे राख हुए बच गई शरर[4] ही नहीं

ग़मों से भागने का कोई रास्ता ना मिला
हयात शब में थी गुज़री हुई सहर ही नहीं

था जिसको चाहा वो राहे फ़ना में है दाहिर
सँवर भी जाओ अभी दिलशिकन ख़बर ही नहीं

❖

1. फ़लक = आकाश, 3. जब्र = जबर्दस्ती, जुल्म, 4. ज़ाबर = ताकतवर, 5. शरर = चिंगारी।

एक फ़ौजी का सियासतदानों को पैग़ाम

रहमतें मत कर तू मुझको डर लगता है
तेरी हिमायतों से मुझको डर लगता है

मैं एक ज़र्रा हूँ बना जो है ज़मीं के लिए
मुझको मिट्टी में रहने दो डर लगता है

तेरा सियासी मरकज़[1] बनना क़ुबूल नहीं
तेरी जदीद[2] कई चालों डर लगता है

सरहदें मेरी मेरे वादों का मुजस्समा[3] हैं
ग़ैर अदू[4] नहीं अब अपनों डर लगता है

हतमी[5] मतबादिल[6] अपने मेहन[7] तन्हा
सोच के रख दाहिर सोचों डर लगता है

❖

1. मरकज़ = केंद्र, 2. जदीद = नई, 3. मुजस्समा = मूर्ति, साकार रूप, 4. अदू = दुश्मन, 5. हतमी = अंतिम, 6. मतबादिल = विकल्प, 7. मेहन = जन्मभूमि।

तल्ख़ियाँ[1] बढ़ती रहीं जितने ही दूर हुये
अपने ही जेह्न से वो कैसे मजबूर हुये

दिल के जज़्बात पे पर्दा है फ़ितरत शायद
वक़्त बदला तो सनम और भी मग़रूर[2] हुए

जीस्त[3] में ग़म के सिवा जिससे कुछ पाया ही ना
वो हैं कहते कि उन्हीं से ही मशहूर हुए

हमने तो काट लिया वक़्त तौबा[4] न किया
अपनी वो सोच पे क़ायम बदस्तूर[5] हुए

तुम तो दाहिर लगे अपने ही मस्लों में रहे
ये सुख़न[6] ख़ुद जहाँ में उन से मस्तूर[7] हुए

❖

1. तल्खियाँ = कड़वाहटें, 2. मग़रूर = अहंकारी, 3. जीस्त = जीवन, 4. तौबा = पश्चाताप, 5. बदस्तूर = यथावत, 6. सुख़न = बात या कविता, 7. मस्तूर = लिखित या वर्णित।

मक़ाम है यहीं से बेबसी गुज़रती रही
जहाँ तेरी थी खुशी मुस्तकिल ठहरती रही

फ़ज़ा की सब्ज सकूँ चैन कैफ़ से ग़ाफ़िल
बनी परायी शै सी वादियों भटकती रही

तराने कहते रहे दिल में ग़म का दरिया है
ये दुनिया देख मेरी बेबसी को हँसती रही

बहा के ले गया था दर्द का समंदर जब
हमेशा दर्द की ही रेत मुझ पे छाती रही

मिरी जराहतों[1] से अब भी दर्द उठता है
बहुत उदास मिरी दर्द-लहर बहती रही

❖

1. जराहत = घाव।

तुम्हारी चाहतों को हम कभी भी ना भुला पाए
जो मिलनी थी हमें पूरी वो क़िस्मत हम गँवा आए

फ़िज़ा अब भी वही है वादियाँ सूनी-सी लगती हैं
जो तस्कीं[1] थीं दिलों की ग़ालिबन[2] उसको लुटा आए

कहीं पहुँचे हमारे ग़म ने अपना साथ ना छोड़ा
थके थे पाँव खोजा था तो तुम तक जा नहीं पाए

हमें तन्हा ही लगता है भले हो भीड़ का आलम
इसी ही भीड़ में खोजा तुम्हें फिर पा नहीं पाए

सड़क अब भी गुज़रती है जहाँ थे हम खड़े रहते
मगर देखा नहीं हमने या फिर तुम आ नहीं पाए

वहाँ तक भी थे हम पहुँचे सदायें गूँजा करती थीं
बहुत कोशिश किया लेकिन तराने गा नहीं पाए

था दाहिर इस जमाने में जमीं पर पाँव ना पड़ते
सुकूते जीस्त[3] फिर जद में कभी हम ला नहीं पाए

❖

1. तस्कीं = तसल्ली, दिलासा 2. ग़ालिबन = शायद, 3. सुकूते जीस्त = जीवन की शांति।

गुज़र तो जाएगी ऐ ज़िंदगी बता क्या होगा
तुम्हारे बाद मेरी इस उदासी का क्या होगा

वो नरगिसी सी तिरे रुख पे खिलखिलाती जो थी
उसी को देखे बिना इस शनासी[1] का क्या होगा

फ़सीले[2] की मिरी जूही है रोती अपनी क़िस्मत
जो तुमसे बात थी करती चमेली का क्या होगा

मिरे चमन के सभी फूल ख़ुद पे रोते हैं अब
वजूद उनके जो छायी सियाही का क्या होगा

कभी मैं सो भी लूँ गर आह को दबा करके फिर
बे वक़्ते सुब्ह में उठती जो ख़्वाही[3] का क्या होगा

इधर-उधर से जो आती सदाएँ वापस दाहिर
उन्हीं के जरिये तुम्हारी तलाशी का क्या होगा

❖

---

1. शनासी = पहचान, 2. फ़सील = चहारदीवारी, 3. ख़्वाही = इच्छा।

घुटनों पानी, नाव चलाता रहता है
उल्टी लहरें रोज़ बहाता रहता है

उलफ़त ने उसको है इतने ठेस दिये
अब तो ख़ुद के साथ ही बैठा रहता है

इतना टूटा है कि उसको मत जोड़ो
अब भी वह रोजाना टूटता रहता है

पानी में कितना दम देख लिया उसने
उम्मीदों पर रोज़ फिरा ही करता है

तनहाई से नहीं है उसको डर लगता
उसको अब अपनों में ही डर लगता है

इस दुनिया में इंसानों को देख लिया
दाहिर जंगल के हैवानों में रहता है

❖

जिस दिन से समझना बंद किया उस दिन से ही जीना सीख लिया
इक वह्म मुक़ाबिल था जेहनी उससे जो निकला जीत लिया

ख़ुदगर्ज़ी थी उनकी अपनी उँगली पकड़ाए रहते थे
जिस दिन से सँभलना सीख लिया उस दिन से ही चलना सीख लिया

चिलमन है उनका या कि कफ़स किसी हाल नुमायाँ होता नहीं
हम आँख गड़ाए बैठे थे पहलू बदले तो दीद लिया

कुछ लोग थे कहते मंज़िल को आसान नहीं है काँटों भरी
जब ख़ौफ़ से थे बाहर निकले मंज़िल ने बख़ुद ही खींच लिया

नफ़रत फैलाना शग़ल तेरा, हम अम्न के नग़मे गाते हैं
ऐ दुनिया वालों नफ़रत को हमने है दिलों से जीत लिया

जो रक्सकुना[1] कासा ए लेस[2] में लग़्जिश[3] ही उन्हें होती ‘अता
चाहे कितना दावा कर ले झूठी शौकत की भीख लिया

कुछ फ़र्क़ जो दाहिर ना होता मयखाने की मय और मेरे में
जिस वक़्त से मैंने मैं छोड़ा दुनिया ने मेरा सुन गीत लिया

❖

1. रक्सकुना = इधर उधर भागने वाला, 2. कासा ए लेस = चापलूसी, 3. लग़्जिश = कमजोरी।

फ़ासले से ही चलना था तो मुड़ गए क्यों बता ही दो
क़ुरबती[1] से ही डर था गर तो रुक गए क्यों बता ही दो

कुछ तो हुआ था जीस्त में जब मिले थे हम अहले शब[2] थे
मेरी बात अधूरी रह गयी उठ गए क्यों बता ही दो

मेरी ख़ामोश आँखों में थे सपने कुछ नए ताबाँ[3]
मैंने रखा निहाँ उनको मगर तुम जुड़ गए क्यों बता ही दो

पोशीदा[4] ख़ुद को करूँ दुनिया की बेगैरती से मैं
आँख को फेरना चाहा था तब तुम मिल गए क्यों बता ही दो

ग़म का दरिया छिपा दाहिर हँसी की नग्माकारी[5] में
मेरी थी बेबसी दिखती खुलकर हँस दिए क्यों बता ही दो

❖

1. क़ुरबती = करीबी, 2. अहले शब = रात के लोग, 3. ताबाँ = चमकदार, 4. पोशीदा = छिपाना, 5. नग़्माकारी = गाने का भाव।

था जिसने बाँध लिया बस हमें अदाओं में
उन्हीं को खोज रहा हूँ अभी फ़िज़ाओं में

मसाइबों[1] में मसर्रत[2] का था मेरा सामाँ
ना जाने खो गया किस बेबसी, हवाओं में

फ़ज़ाए हस्ती[3] मेरी इख्तियार से बाहर
नहीं है ज़ौके तलब[4] अब किन्हीं शुआओं[5] में

हुआ बे-राह तवाज़न[6] के मै त'अक्कुब[7] में
बहार जो थी उसे खोजता ख़िज़ाओं में

लगा है सिर्फ़ बनाने में बिजलियाँ बादल
नहीं है हुस्न नहीं बूँद है घटाओं में

कभी थे बज़्में तरब[8] में अभी अँधेरे हैं
थे दस्तयाब[9] कभी जज़्ब हैं ख़लाओं[10] में

हयात लगती है यूँ तल्ख़ियों[11] का मजमुआ[12] हो
नहीं बची है वो तासीर[13] अब सदाओं[14] में

निसार करते थे जो जान ज़िक्र ए फ़ुरक़त[15] से
थे पायदारी[16] नहीं पाए फिर वफ़ाओं में

निहाँ था दर्द कोई दैर[17] ना बचा दाहिर
नहीं है अब तो असर मिलता कुछ दुआओं में

❖

---

1. मसाइब = विपत्ति, 2. मसर्रत = दिली खुशी, 3. फ़ज़ाए हस्ती = जीवन का वातावरण, 4. ज़ौके तलब = अत्यधिक इच्छा, 5. शुआओं = रश्मियों, 6. तवाज़न= संतुलन, 7. त'अक्कुब = पीछा, अनुसरण करना, 8. बज़्मे तरब = ख़ुशी की महफ़िल, 9. दस्तयाब = हाथ में, उपलब्ध, 10. ख़लाओं = शून्य, 11. तल्ख़ी = कटुता, 12. मजमुआ = समूह, गट्ठर, 13. तासीर = असर, 14. सदा = आवाज़, 15. ज़िक्रे फ़ुरक़त = जुदाई की चर्चा, 16. पायदारी = स्थायित्व, 17. दैर = धार्मिक स्थान।

गुजश्ता[1] लम्हे पकड़ने की चाह कर रहा हूँ
मैं फिर से उसकी जफ़ाओं[2] को याद कर रहा हूँ

भटक रही है मेरी ज़िंदगी खलाओं[3] में
इन्हीं ख़लाओं से ज़ाहिर उमीद कर रहा हूँ

जो अपनी हद से गुज़र ना सकी कहानी वह
हदें है अपनी वहीं पर तलाश कर रहा हूँ

थे जिस मक़ाम मेरे ख़्वाब चूर चूर हुए
वहीं पे सजदा बदस्तूर[4] रह के कर रहा हूँ

मुझे है शिकवा नहीं उनकी इज्तिनाबी[5] अदा
मैं याद अब भी तो दाहिर उन्हीं को कर रहा हूँ

❖

1. गुजश्ता = बीते हुये, 2. जफ़ाओं = बेरुखी, 3. खलाओं = खालीपन, 4. बदस्तूर = नियम से, 5. इज्तिनाबी = परहेज करने वाली।

वादा-ए-बेवफ़ा की उल्फ़त हूँ
अपनी दुश्वारियों की खसलत[1] हूँ

दूने पैसे में जो मिलती है यहाँ
मैं मिज़ाजन ही वो बै रंग ख़त हूँ

दाम जब लगने लगे इंसाँ का
मैं लिहाज़न ही तिजारत[2] लत हूँ

है यहाँ तन की बहा[3] मन की भी
क़ौम की मैं क़तई[4] ग़ुरबत[5] हूँ

तेरी जब बिक गयी थी ख़ुद्दारी
ज़ीस्त दाहिर की वही क़ीमत हूँ

❖

1. खसलत = आदत, स्वभाव, 2. तिजारत = व्यापार, 3. बहा = मूल्य 4. क़तई = निश्चित, एकमात्र, 5. ग़ुरबत = गरीबी, निःसहाय, उदासी।

रोज़ जलवत[1] का वहम रखते हैं
सच है खलवत[2] में ही तो जीते हैं

कामयाबी सफ़र को कहते है
ख़ुद-ब-ख़ुद मंज़िलों को लाते हैं

पंछियो के तो घर नहीं होते
फिर भी हर शाम लौट आते हैं

तल्ख़[3] क़िस्से को दोहराने से
लम्हे वे लौट कर ना आते हैं

दिल नहीं मिलते बात करने से
रोज़ मिलते हैं टूट जाते हैं

अपना लहज़ा सँभाल कर रखो
लफ़्ज़ नस्लों को बात देते हैं

फायदा है बहुत गिरी हुई शै
लोग तो बस उठाते रहते है

सुब्ह होती नहीं है लोगो की
जह्न में रात ले के फिरते हैं

मायने है सफ़र का या मंज़िल
साथ दाहिर जवाब आते हैं

❖

1. जलवत = भीड़ भाड़ वाली जगह, 2. खलवत = एकांत, 3. तल्ख़ = कटु।

शमाँ जलती हुई पिघलती रही
आरज़ू क़ैद में मचलती रही

लह्द[1] शफ़्फ़ाफ[2] ज़ौ[3] के मंज़र में
ख़्वाहिशों के लिए तड़पती रही

कँपकँपाती सी नचाती जिस्म
कितने अरमान ले सिसकती रही

ख़ाक कर दे जो इक नज़र में शै[4]
रहम की चाह में बिलखती रही

आस उसकी तुम्हारी जानिब थी
ख़ास दाहिर तुम्हें परखती रही

❖

1. लह्द = कब्र, कब्र का रिक्त स्थान, 2. शफ़्फ़ाफ = पारदर्शी, 3. ज़ौ = प्रकाश, 4. शै = वस्तु, चीज़।

नज़्म

रश्क[1] ग़ैरों को हो भले लेकिन
जो हो नज़रों में मेरी पढ़ लेना

शीशे की मोती की बनी पुतली
झाँकती लाल रंग ओढ़नी से

मानो नीलोफरों[2] से ख़ुद हो सजी
रंग हो उसने लिया शफ़क़[3] ही से

शुआ-ए-नीलगूँ[4] शगुफ़्ता[5] हुई
लहर ने ख़ुद का तश्किला[6] हो किया

आब सफ़्फ़ाफ़[7] की मुजस्समा[8] बन
और अपने को मुंतकिल[9] हो किया

मैंने पाया कशिश तेरे अंदर
साँस में अपनी मुझको रख लेना

हाथ रंगे हुये महावर से
पैर में आलते की लाली हो

मोतियों से जड़े कमरबंद ओ
शेरनी सी कमर में डाली हो

कान की बाली की चमक ऐसी
अक्स की ख़ुद मिसाल बन बैठी

सुर्ख़ पेशानी[10] ज़ुल्फ़[11] अब्र[12] तरह
बर्क़[13] से रोशनी हो ले बैठी

मैं किसे देख के ये कह लूँगा
मैं अगर कुछ कहूँ तो सुन लेना

काविशें[14] जुल्फों की तेरे रुख पे
करती अठखेलियाँ तेरे आरिज़[15]

इन परीशान शै को क्या कह दूँ
कुछ तो सरगोशियाँ[16] यहाँ काबिज

मैं इन्हें देखूँ ये रक़ीब[17] मेरी
तेरी पेशानी पर अरक़[18] आये

इस पे चस्पा मेरा मुकद्दर है
बेखबर हूँ कि कब समझ आये

मैं इबादत में हुस्न के ग़ाफ़िल
होश आये मुझे बता देना

भौंह दोनों मिली कमान बनी
और इस पर जो तीर रखा है

मैं हूँ या कौन है हदफ़[19] इसका
दिल तो पहले से ज़ख़्मी रखा है

मुझको लगता है नाक पे ग़ुस्सा
फिर ये हैरत कि कुछ अलग सा है

होंठ तेरे हैं तिश्न लब[20] जिन पर
प्यास सदियों की पा के रखा है

शग़ल[21] ही है मेरी बनी क़िस्मत
हो सके तो मुझे उठा लेना

पंखुड़ी हैं गुलाब की लगते
आश्ना क्यों न कोई हो जाये

कितने शीरीं[22] हैं कि तसव्वुर[23] में
चूस लूँ यह शराब बन जाये

सर्निगूँ[24] पलकें फड़फड़ाई थीं
दिल उछल कर गले में आया था

उसके दाँतों में सुर्ख़ आँचल ज्यूँ
शर्म से उसने जो दबाया था

मुझको आती नहीं सुख़नगोई[25]
बात अपनी नज़र से पढ़ लेना

मेरे अहसास कितने नादाँ थे
तम्कनत[26] हुस्न की समझ न सके

और इक सपना था नुमायाँ हुआ
जिसको पूरी हयात पा न सके

खैर यह किस्सा मुल्तवी कर के
आँख फिर से उलझ गयी बुत में

बस पशेमानी थी फ़िज़ाँ में ब-सद[27]
ज़ोहरा[28] का जादू बस गया ख़ुद में

हो ना नासाज़[29] इस तख़ातुब[30] से
आता मुझको नहीं छिपा लेना

देख गर्दन की तेरी रअनाई[31]
तरस आता मुझे सुराही पर

जो गले का बनेगा हार उस की
रश्क होता मुझे गुनाही[32] पर

दोनों नुक़्ते बदन के दोनों जहाँ
और टिकते गुदाज़[33] खुशकुन[34] हों

बोझ इनका कमर उठा न सके
चल दें तो ख़ुशनुमा तलातुम[35] हो

देखने से बहक गए जज़्बे
गिर अगर जाऊँ तो उठा देना

फ़ख़्ज़[36] खंभे सी साफ़ केले की
और उस पर हो पारसाई[37] का रंग

मन बहक जाय तो ख़ता क्या है
कुछ अलग सा है तेरे हुस्न का ढँग

मैं तो भटका हुआ मुसाफ़िर हूँ
मेरे कहने को दिल पे मत लेना

रश्क ग़ैरों को हो भले लेकिन
मैं अगर कुछ कहूँ तो सुन लेना

---

1. रश्क = ईर्ष्या, 2. नीलोफर = कमल, 3. शफ़क़ = उषा, 4. शुआ ए नीलगूँ = नीले रंग की रश्मियाँ, 5. शगुफ़्ता = खिला हुआ, प्रसन्नमुख, 6. तश्किला= रूप बदलना, आकार देना, 7. शफ़्फ़ाफ़ = पारदर्शी, 8. मुजस्समा = मूर्ति, प्रतिमा, 9. मुंतक़िल = एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना, विस्थापित, 10. पेशानी = ललाट, 11. गेसू = बाल, 12. अब्र = बादल, 13. बर्क़ = बिजली, 14. काविश = खोज, तलाश, 15. आरिज़ = गाल, 16. सरगोशियाँ = चुपके चुपके की गयी बात, 17. रक़ीब = प्रतिद्वंदी, 18. पेशानी पर अरक़ आना = लज्जित होना, 19. हदफ़ = लक्ष्य, 20. तिश्न-लब = प्यासे होंठ, 21. शगल = मनोरंजन, 22. शीरीं = मीठे, 23. तसव्वुर = कल्पना, 24. सर्निगूँ = झुकी हुई, 25. सुख़नगोई = कविता करना, 26. तम्कनत = दबदबा, हुकूमत, 27. ब-सद = बहुत ज्यादा, 28. ज़ोहरा = सुंदरी, 29. नासाज़ = अननुकूल, 30. तख़ातुब = सम्बोधन, प्रेमी का प्रेयसी के प्रति प्रेम प्रदर्शित करना, 31. रअनाई = लावण्य, 32. गुनाही = अपराधी या दोषी, 33. गुदाज़= मांसल, 34. खुशकुन = प्रसन्न करने वाला, 35. तलातुम = बेचैनी, यहाँ बेचैन हरकतें है, 36. फ़ख़्ज = जाँघ, 37. पारसाई = पवित्रता।

दिनेश श्रीवास्तव 'दाहिर'

पिता का नाम

स्व. भगवान प्रसाद श्रीवास्तव

जन्म-स्थान

ग्राम-मधनापार, पोस्ट-बिलरियागंज, जिला-आजमगढ़

निवास स्थान

शिवाजी नगर, पोस्ट-हीरापट्टी, जिला-आजमगढ़-276001

व्यवसाय

सेवानिवृत्त बैंक प्रबंधक

अभिरुचि

ग़ज़ल, नज़्म और हिंदी काव्य-लेखन

विशेष अभिरुचि

संगीत निर्देशन (हिंदी, उर्दू एवं भोजपुरी एल्बम व फिल्म)

भाषा विज्ञान एवं इतिहास

पद (वर्तमान समय में)

अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश साहित्य सभा, आजमगढ़ सचिव, इंडियन एजूकेशनल ऐंड कल्चरल सोसाइटी (सांस्कृतिक संस्था)

उपलब्धियाँ

विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर काव्यपाठ एवं व्याख्यान एवं सम्मान

मोबाइल नम्बर

9415084488, 9335012670

संप्र

संकल्प प्रकाशन

दिल्ली-110090

ISBN 978-93-91040-69-7

9 789391 040697